



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)  
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 71]

नई दिल्ली, सोमवार, जनवरी 12, 2009/पौष 22, 1930

No. 71]

NEW DELHI, MONDAY, JANUARY 12, 2009/PAUSA 22, 1930

लोक सभा सचिवालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 12 जनवरी, 2009

का.आ. 123(अ).—लोक सभा अध्यक्ष का भारत के संविधान की दसवीं अनुसूची के अधीन दिनांक 9 जनवरी, 2009 का निम्नलिखित विनिश्चय एतद्वारा अधिसूचित किया जाता है :—

“माननीय लोक सभा अध्यक्ष के समक्ष

संसद भवन, नई दिल्ली

श्री राजीव रंजन सिंह “ललन”,  
संसद में जनता दल (यू) के मुख्य सचेतक,  
45-I, संसद भवन,  
नई दिल्ली ।

.....याची

बनाम

डॉ. पी. पी. कोया,  
संसद सदस्य (लोक सभा),  
दिल्ली का पता : 25, कॉनिंग लेन,  
नई दिल्ली ।

निर्वाचन क्षेत्र का पता :

पल्लीचापुरा हाउस,  
अमीनी-682552,  
लक्षद्वीप ।

.....प्रत्यर्थी

के मामले में :

आदेश :

1. यह आवेदन लोक सभा के माननीय सदस्य और लोक सभा में जनता दल (यूनाईटेड) [जिसे इसमें इसके पश्चात् जद (यू) कहा

162 GI/2009

गया है] के मुख्य सचेतक श्री राजीव रंजन सिंह ‘ललन’ द्वारा दाखिल किया गया है, जिसमें इस घोषणा के संबंध में प्रार्थना की गई है कि प्रत्यर्थी डॉ. पी. पी. कोया को इस आधार पर भारत के संविधान की दसवीं अनुसूची के अधीन वर्तमान लोक सभा का सदस्य होने और बने रहने से निरह किया जाए कि प्रत्यर्थी उक्त अनुसूची के पैरा 2(1)(ख) के अंतर्गत निरह हो गया है ।

2. याची के अनुसार प्रत्यर्थी लोक सभा के लिए जद (यू) के टिकट पर 2004 में हुए निर्वाचन में लक्षद्वीप निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित हुए थे तथा उनका नाम लोक सभा के रिकार्ड में जद (यू) की सदस्य सूची में शामिल है ।

3. याचिका में यह कहा गया है कि 21 और 22 जुलाई, 2008 को भारत के प्रधान मंत्री द्वारा विश्वास मत प्राप्त करने के आशय से लोक सभा का विशेष सत्र बुलाया गया था तथा जद (यू) ने 21 जुलाई, 2008 को प्रत्यर्थी सहित लोक सभा में अपने सभी सदस्यों को तीन पंक्ति का व्हिप जारी किया था जिसमें उनसे यह अपेक्षा की गई थी कि वे उक्त तारीखों को सभा में उपस्थित रहें और केन्द्रीय मंत्रिपरिषद् में विश्वास प्रस्ताव के विरुद्ध मतदान करें । याची द्वारा जद (यू) के मुख्य सचेतक के रूप में जारी तीन पंक्ति के व्हिप की एक प्रति याचिका के साथ संलग्न की गई है ।

4. याची द्वारा यह तर्क दिया गया है कि प्रत्यर्थी ने 22 जुलाई, 2008 को एक फैक्स संदेश भेजा था जिसमें कहा गया कि वह विभिन्न रोगों से ग्रस्त थे और वह मेडिकल कॉलेज अस्पताल/ईएनटी अस्पताल, विशाखापत्तनम में भर्ती थे तथा इसलिए संसद के विशेष सत्र में उपस्थित होने में असमर्थ थे ।

5. याची ने याचिका में यह तर्क दिया है कि प्रत्यर्थी द्वारा भेजे गए फैक्स संदेश में उल्लिखित रोग इतना गंभीर नहीं था कि “वह विशेष सत्र में उनके उपस्थित होने में बाधक बनता” और यह कि प्रत्यर्थी ने

जानबूझकर व्हिप का उल्लंघन करने का प्रयास किया और यह कि वह दल के निदेशों तथा व्हिप के विरुद्ध अनुपस्थित रहे जिसे दल द्वारा माफ नहीं किया गया है।

6. इस प्रकार याची का तर्क है कि प्रत्यर्थी डॉ. पी. पी. कोया का यह कृत्य भारत के संविधान की दसवीं अनुसूची के पैरा 2 (1)(ख) के अंतर्गत आता है और इस प्रकार वह वर्तमान लोक सभा का सदस्य होने और बने रहने से निरह हो गए हैं।

7. लोक सभा सचिवालय के संयुक्त सचिव को सम्बोधित 22 अगस्त, 2008 के एक पत्र द्वारा प्रत्यर्थी ने याची द्वारा दाखिल की गई याचिका की पावती दी थी और 21 जुलाई, 2008 को विशाखापत्तनम स्थित ईएनटी अस्पताल में अपने भर्ती होने तथा अगले दिन अपना ऑपरेशन होने के बारे में उल्लेख किया था तथा यह बताया गया था कि वह जानबूझकर लोक सभा के विशेष सत्र से अनुपस्थित नहीं रहे थे और उनकी अनुपस्थिति उनकी प्रतिकूल स्वास्थ्य दशा के कारण थी।

8. याची द्वारा दाखिल याचिका के जवाब में प्रत्यर्थी ने 22 सितम्बर, 2008 को एक विस्तृत उत्तर दाखिल किया जिसमें उन्होंने 20 जुलाई, 2008 को विशाखापत्तनम में हुए एक समारोह तथा अपनी बीमारी और ईएनटी अस्पताल में अपने उपचार का उल्लेख किया था तथा उन्होंने अपनी बीमारी और उपचार से संबंधित अनेक दस्तावेज संलग्न किए थे। प्रत्यर्थी के अनुसार उन्हें "संसद के विशेष सत्र में उपस्थित होने के लिए विमान से दिल्ली आना था" लेकिन अपनी बीमारी के कारण वह ऐसा नहीं कर सके और इसलिए उन्होंने अपनी अस्वस्थता तथा विशेष सत्र में उपस्थित होने में अपनी असमर्थता को स्पष्ट करते हुए 22 जुलाई, 2008 को अध्यक्ष को एक फैक्स संदेश भेजा था तथा उन्होंने उसकी एक प्रति जद (यू) संसदीय दल के नेता श्री प्रभुनाथ सिंह तथा साथ ही दल के मुख्यालय को भी भेजी थी।

9. 12 सितम्बर, 2008 को मैंने दोनों पक्षों की व्यक्तिगत रूप से सुनवाई की जिसमें याची और प्रत्यर्थी दोनों उपस्थित थे जिसमें याची ने तर्क दिया कि प्रत्यर्थी ने न तो पूर्वानुमति ली थी और न ही पार्टी द्वारा उनकी अनुपस्थिति को माफ किया गया था और दूसरी ओर 24 जुलाई, 2008 को पार्टी ने उन्हें पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से निष्कासित करने का निर्णय लिया था। सुनवाई में प्रत्यर्थी ने स्वीकार किया कि 21 जुलाई, 2008 को व्हिप उनके पुत्र को तामील किया गया था और उन्होंने उनके बीमार होने तथा अस्पताल में भर्ती होने के बारे में बताया था। सुनवाई का पूर्ण रिकार्ड उक्त तारीख की कार्यवाही के कार्यवाही सारांश में देखा जा सकता है।

10. उक्त सुनवाई में प्रत्यर्थी ने कुछ और दस्तावेज प्रस्तुत करने के लिए समय मांगा और उन्हें ऐसा करने में सहयोग देने के लिए मैंने मामले की सुनवाई 24 सितम्बर, 2008 तक स्थगित कर दी।

11. अगली सुनवाई 26 सितम्बर, 2008 को हुई जिसमें याची और उनके दल के नेता, श्री प्रभुनाथ सिंह, प्रत्यर्थी और उनके विद्वान वकील उपस्थित थे और याची एवं प्रत्यर्थी के विद्वान वकील द्वारा निवेदन किए गए। उक्त सुनवाई की कार्यवाही उक्त सुनवाई के कार्यवाही-सारांश में है, जो इन कार्यवाहियों के रिकार्ड का भाग है।

सुनवाई में प्रत्यर्थी के विद्वान वकील ने अपने मुबकिल द्वारा प्रस्तुत किए गए दस्तावेजों को सिद्ध करने के लिए कुछ और समय देने का अनुरोध किया। प्रत्यर्थी को ऐसा साक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए, जैसा कि वह चाहता है, मामले को स्थगित कर दिया गया और सुनवाई की अगली तारीख 22 दिसम्बर, 2008 नियत की गई।

12. अन्तर्ग्रस्त मुद्दों और संबंधित पक्षकारों के तर्क पर विचार करने के पश्चात् में इस तथ्य से संतुष्ट था कि मामले की प्रकृति और परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए याचिका को लोक सभा सदस्य (दल-परिवर्तन के आधार पर निरहता) नियम, 1985 के नियम 7(4) में दिए गए उपबंध के अनुसार लोक सभा की विशेषाधिकार समिति को प्रारंभिक जांच करने और मुझे इसका प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के लिए सौंपना आवश्यक व अनिवार्य था; और इस प्रकार इसे 1 दिसम्बर, 2008 को समिति को सौंपा गया।

13. 15 दिसम्बर, 2008 को लोक सभा की विशेषाधिकार समिति ने अपना प्रतिवेदन अध्यक्ष के रूप में मुझे प्रस्तुत किया। समिति ने याची को कार्यवाही में अपने समक्ष उपस्थित होने का अवसर प्रदान किया और अपने प्रतिवेदन में यह अभिनिर्धारित किया कि प्रत्यर्थी निश्चायक रूप से यह सिद्ध करने में विफल रहा कि वह शारीरिक रूप से इतना अक्षम थे कि वह 22 जुलाई, 2008 को विश्वास प्रस्ताव पर मतदान में उपस्थित होने में असमर्थ थे; और यह कि ऐसा कोई तात्विक साक्ष्य नहीं है जिससे यह पता चलता हो कि उनकी बीमारी इतनी गंभीर थी कि वह 22 जुलाई, 2008 को विश्वास प्रस्ताव में मतदान नहीं कर पाए और उनके पास दिखाने के लिए ऐसा कुछ नहीं था कि उन्हें दिल्ली तक यात्रा न करने की चिकित्सीय सलाह दी गई थी। समिति का प्रतिवेदन और उसकी बैठकों का कार्यवाही सारांश, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ विशेषाधिकार समिति के समक्ष प्रत्यर्थी द्वारा दिया गया साक्ष्य भी शामिल है, इस कार्यवाही के रिकार्ड का भाग होगा।

14. विशेषाधिकार समिति का प्रतिवेदन, जिसकी एक प्रति प्रत्यर्थी को प्राप्त हुई थी, को प्रस्तुत किए जाने के पश्चात् मैंने 22 दिसम्बर, 2008 को मामले की एक और व्यक्तिगत सुनवाई की जिसमें प्रत्यर्थी उपस्थित थे। इसी बीच याची ने लोक सभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया और इस कारण वह अनुपस्थित थे। उक्त सुनवाई में प्रत्यर्थी ने अपना निवेदन प्रस्तुत किए और साक्ष्य भी दिया जिसमें उन्होंने अन्य बातों के साथ-साथ यह भी उल्लेख किया कि वह न केवल बीमार थे बल्कि उनके लिए यात्रा करना भी संभव नहीं था क्योंकि वह अन्तःरोगी के रूप में भर्ती थे। प्रत्यर्थी ने चिकित्सीय प्रमाणपत्रों का उल्लेख किया और यह बताया कि, "ये मेरे प्रमाणपत्र हैं। यदि ये प्रमाणपत्र पर्याप्त नहीं हैं, तो कृपया मुझे कुछ और प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने का अवसर दीजिए जिन्हें मैं प्रस्तुत कर सकता हूँ। क्या मैं अपने चिकित्सक को यहां ला सकता हूँ? क्या मैं चिकित्सक से दूसरा प्रमाणपत्र लाकर दे सकता हूँ?"

15. तत्पश्चात्, प्रत्यर्थी द्वारा मेरे समक्ष किए गए अनुरोध पर विचार करते हुए संबंधित चिकित्सक, डॉ. ए. जम्मेश्वर राव, प्रोफेसर, ईएनटी, एच एण्ड एन सर्जरी, एएमसी, विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश को मेरे समक्ष उपस्थित होने और साक्ष्य देने का अनुरोध करते हुए

एक नोटिस भेजा गया जिसके लिए 6 जनवरी, 2009 की तारीख नियत की गई। इस तारीख को मैंने आगे व्यक्तिगत सुनवाई की अनुमति दी जिसमें प्रत्यर्थी के अलावा उक्त चिकित्सक भी उपस्थित थे। डॉ. जम्मेश्वरराव द्वारा दिए गए साक्ष्य का पूरा रिकार्ड 6 जनवरी, 2009 को हुई व्यक्तिगत सुनवाई के कार्यवाही सारांश में दिया हुआ है और यह इस कार्यवाही के रिकार्ड का भाग है।

16. साक्ष्य के दौरान, अन्य बातों के साथ-साथ, डा. ए. जम्मेश्वरराव ने यह बताया कि प्रत्यर्थी डॉ. पी.पी. कोया 20 अथवा 21 जुलाई, 2008 को दिल्ली की यात्रा कर सकते थे तथा उन्होंने यह सलाह नहीं दी थी कि वह उक्त तारीखों को यात्रा न करें और चूँकि 22 जुलाई, 2008 को उनकी हालत बिगड़ गई थी इसलिए उन्होंने डा. कोया को अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती करवा दिया था। अतः साक्ष्य से ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्यर्थी 20 अथवा 21 जुलाई, 2008 को आसानी से दिल्ली आ सकता था, यद्यपि बाद में मेरे एक विशिष्ट प्रश्न के उत्तर में डॉक्टर ने कहा कि उनके लिए यात्रा करना उचित नहीं है जो उनके द्वारा पहले दिए गए कथन के विपरीत था।

17. 22 दिसम्बर, 2008 को हुई सुनवाई में दिए गए अपने साक्ष्य के दौरान प्रत्यर्थी ने इस बात को स्वीकार किया था कि उन्हें 20 जुलाई, 2008 को विशाखापत्तनम में एक समारोह में भाग लेना था लेकिन उन्होंने यह स्वीकार किया कि अगले दिन अर्थात् 21 जुलाई, 2008 को, जिस दिन विश्वास प्रस्ताव पर वाद-विवाद प्रारंभ होना था, उन्होंने दिल्ली पहुँचने हेतु कोई व्यवस्था नहीं की थी। उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने किसी भी विमान में कोई सीट बुक नहीं कराई थी और यह कि "यह कार्य सामान्यतया एजेन्ड्स करते हैं"। तत्पश्चात् सुनवाई में निम्नलिखित बातें हुई :

"अध्यक्ष महोदय : क्या आप इस बात को साबित कर सकते हैं कि इस मामले में ऐसा किया गया? 22 जुलाई, 2008 के मतदान के लिए क्या आपने कोई सीट बुक कराई थी?

प्रत्यर्थी : जी, नहीं। मेरी टिकट केवल 26 जुलाई के लिए बुक थी। मैंने उस विशेष तारीख के लिए टिकट बुक नहीं कराई थी।

अध्यक्ष महोदय : समारोह 20 जुलाई को था; सत्र की तारीखें 21 और 22 जुलाई थीं। अतः समारोह के समाप्त होने के पश्चात् आप विशाखापत्तनम से दिल्ली आना चाहते होंगे। क्या आपने उस यात्रा के लिए टिकट बुक कराई है।

प्रत्यर्थी : यह सद्भाव में किया गया था। जब मैं दिल्ली आने के बारे में सोच रहा था, तब मैं अस्वस्थ था।

अध्यक्ष महोदय : अतः टिकट बुक करने का कोई सवाल ही नहीं था?"

18. संविधान की दसवीं अनुसूची के पैरा 2(1)(ख) में यह उपबंध है कि पैरा 4 और 5 के उपबंधों के अधधीन किसी भी राजनीतिक दल से संबंधित सदस्य, यदि वह ऐसे राजनीतिक दल, जिसका वह सदस्य है, की पूर्व अनुज्ञा के बिना ऐसे सदन में मतदान करता है या मतदान करने से विरत रहता है और ऐसा मतदान करने से विरत रहने को ऐसे राजनीतिक दल ने ऐसे मतदान या मतदान से विरत रहने की तारीख से पन्द्रह दिन के भीतर माफ नहीं किया है, सदन का सदस्य रहने के लिए निरर्थक हो जाएगा। वर्तमान मामले में पैरा 4 और 5 के उपबंध लागू नहीं होते।

19. डा. महाचन्द्र प्रसाद सिंह ब्रनाम सभापति, बिहार परिषद् एवं अन्य (2004) 8 एससीसी 747 के निर्णय में, माननीय उच्चतम न्यायालय ने टिप्पणी की है कि दसवीं अनुसूची के अधीन "सभा के सदस्य की निरर्थकता के मुद्दे पर निर्णय करने का अंतिम प्राधिकार सभा के सभापति या अध्यक्ष में निहित है। यह ध्यान देने योग्य है कि दसवीं अनुसूची में सभा के सभापति या अध्यक्ष को कोई विवेकाधिकार नहीं दिया गया है। उनकी भूमिका केवल संबद्ध तथ्यों को सुनिश्चित करने तक ही सीमित है। एक बार एकत्रित अथवा प्रस्तुत तथ्यों से यह प्रकट होने पर कि सभा के किसी सदस्य ने ऐसा कोई कृत्य किया है जो दसवीं अनुसूची के पैरा 2 के उप-पैरा (1), (2) या (3) की परिधि में आता है, निरर्थकता लागू होगी और सभा के सभापति या अध्यक्ष को इस आशय का निर्णय लेना होगा।"

20. जैसा कि पहले बताया गया है, प्रत्यर्थी को अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए व्यक्तिगत सुनवाई के दौरान पर्याप्त अवसर दिया गया था तथा उनके विद्वान वकील ने उनकी सहायता की थी और उनके अनुरोध पर लोक सभा सचिवालय ने विशाखापत्तनम के संबंधित डॉक्टर के उपस्थित रहने की भी व्यवस्था की थी ताकि मेरे समक्ष व्यक्तिगत सुनवाई के दौरान वह अपना साक्ष्य दे सकें।

21. जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है लोक सभा की विशेषाधिकार समिति ने सभी पक्षों विशेषकर प्रत्यर्थी को पूरा मौका देने के पश्चात् और पूरे विचार-विमर्श के बाद अपने प्रतिवेदन में यह स्वीकार किया है कि प्रत्यर्थी इतने बीमार नहीं थे कि वे दिनांक 21 और 22 जुलाई, 2008 को सभा में उपस्थित होने से प्रतिबाधित हों। मैंने उस साक्ष्य का भी अवलोकन किया है जो मेरे समक्ष रखा गया और 20 जुलाई, 2008 को विशाखापत्तनम में समारोह में भाग लेने के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि प्रत्यर्थी से यह अपेक्षित था कि वह तत्काल दिल्ली आए होते जिसके लिए कम से कम बुकिंग अथवा आरक्षण करा दिए जाते परंतु उनकी स्वीकारोक्ति से उन्होंने ऐसा नहीं किया और उल्टे उन्होंने यह कहा कि दिल्ली आने के लिए उनका टिकट केवल 26 जुलाई, 2008 के लिए ही था और जब उनसे यह पूछा गया कि उन्होंने 21 अथवा 22 जुलाई, 2008 को यात्रा के लिए बुकिंग क्यों नहीं करवाई तो उन्होंने टालमटोल वाला उत्तर दिया, जो ऊपर उद्धृत है।

22. मेरे समक्ष प्रस्तुत की गई समस्त सामग्री और विशेषकर साक्ष्य पर गंभीरता से विचार करने के पश्चात् और इस तथ्य पर गौर करने के बाद कि प्रत्यर्थी ने स्वीकार किया है कि उन्हें दल द्वारा व्हिप जारी किया गया था, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अपने दल द्वारा दिए गए निदेशानुसार विश्वास प्रस्ताव के दौरान सभा में अनुपस्थित होकर मतदान में भाग नहीं लिया और 'रुग्णता' का प्रस्तुत साक्ष्य यह निष्कर्ष निकालने में अपर्याप्त है कि वे इतने बीमार थे कि सभा की कार्यवाही में भाग लेने के लिए उपस्थित नहीं हो सके अथवा 22 जुलाई, 2008 को संपन्न मतदान में भाग नहीं ले पाए। वैसे भी उन्होंने स्वीकार किया है कि उन्होंने विशाखापत्तनम में 20 जुलाई, 2008 को समारोह समाप्त होने के ठीक पश्चात् दिल्ली आने का कोई भी प्रयास नहीं किया तथा उनका टिकट 26 जुलाई, 2008 के लिए बुक किया गया था। जो यह दर्शाता है कि उनकी अनुपस्थिति ऐसी किसी भी परिस्थितिजन्य विवशता के कारण नहीं हुई थी जिसने उन्हें सत्र में

उपस्थित होने में प्रतिबाधित किया। इस संबंध में मैं विशेषाधिकार समिति के निष्कर्षों को स्वीकार करता हूँ। मुझे खेद है कि मैं प्रत्यर्थी के इस तर्क को स्वीकार नहीं कर सकता कि प्रत्यर्थी 22 जुलाई, 2008 को विश्वास प्रस्ताव के दौरान मतदान के प्रयोजनार्थ सभा की कार्यवाही में भाग लेने के लिए अस्वस्थ थे।

23. अध्यक्ष की हैसियत से मेरा प्राथमिक दायित्व माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा यथाधारित संगत तथ्यों को अभिनिश्चित करना है। इस निष्कर्ष पर पहुंचने के पश्चात् कि प्रत्यर्थी ने 22 जुलाई, 2008 को अपने दल के निदेश के विपरीत मतदान में भाग नहीं लिया, प्रत्यर्थी का यह कृत्य संविधान की दसवीं अनुसूची के पैरा 2(1)(ख) के क्षेत्राधिकार में आता है तथा मैं तदनुसार विनिश्चय करता हूँ।

24. इस प्रकार मैं निर्णय करता हूँ कि लक्षद्वीप निर्वाचन क्षेत्र से लोक सभा के निर्वाचित सदस्य प्रत्यर्थी डॉ. पी.पी. कोया 22 जुलाई, 2008 को हुए मतदान में सभा से अनुपस्थित रहने और भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा पेश किए गए विश्वास प्रस्ताव के विरुद्ध मतदान न करने पर भारत के संविधान की दसवीं अनुसूची के पैरा 2(1)(ख) के अधीन निरह हो गए हैं।

25. इस प्रकार प्रत्यर्थी 14वीं लोक सभा का सदस्य बने रहने के लिए निरह हो गए हैं तथा यह घोषित किया जाता है कि उनका स्थान रिक्त हो गया है।

ह./-

सोमनाथ चटर्जी  
अध्यक्ष, लोक सभा

नई दिल्ली  
9 जनवरी, 2009

[सं. 46/37/2008/टी.]

पी.डी.टी. आचारी, महासचिव

## LOK SABHA SECRETARIAT

### NOTIFICATION

New Delhi, the 12th January, 2009

**S.O. 123(E).**—The following Decision dated 9 January, 2009 of the Speaker, Lok Sabha given under the Tenth Schedule to the Constitution of India is hereby notified :—

### “BEFORE THE HON'BLE SPEAKER OF LOK SABHA PARLIAMENT HOUSE, NEW DELHI

In the matter of :

Shri Rajeev Ranjan Singh “Lalan”,  
Chief Whip of Janata Dal (U) in Parliament,  
45-I, Parliament House,  
New Delhi.

.....Petitioner

Versus

Dr. P. P. Koya,  
Member of Parliament (Lok Sabha),  
Delhi Address : 25, Canning Lane, New Delhi.  
Constituency Address : Pallichapura House,  
Amini - 682 552,  
Lakshadweep.

....Respondent

### ORDER

1. This is an application filed by Shri Rajiv Ranjan ‘Lalan’, Hon’ble Member, Lok Sabha and Chief Whip of Janata Dal (United), [hereinafter referred to as JD (U)], in Lok Sabha praying for a declaration that the Respondent, Dr. P. P. Koya may be disqualified from being and continuing as a Member of the present Lok Sabha under the Tenth Schedule of the Constitution of India on the ground that the Respondent has incurred disqualification under paragraph 2 (1) (b) of the said Schedule.

2. According to the Petitioner, the Respondent was elected to the Lok Sabha from Lakshadweep Constituency in the election held in 2004 on JD (U) ticket and that his name is entered in the list of JD (U) Members in the records of Lok Sabha.

3. In the Petition it has been stated that a Special Session of Lok Sabha was summoned on 21 and 22 July, 2008 to enable the Prime Minister of India to seek a vote of confidence and the JD (U) on 21 July, 2008 had issued a three-line whip to all its members in Lok Sabha including the Respondent requiring them to be present in the House on the said dates and vote against the Motion of Confidence in the Union Council of Ministers. A copy of the three-line whip issued by the Petitioner, as the Chief Whip of JD (U), has been set out in the Petition.

4. It is contended by the Petitioner that the Respondent had sent a fax message dated 22 July, 2008 stating that he was suffering from various ailments and was admitted in Medical College Hospital / ENT Hospital, Visakhapatnam and was therefore not able to attend the Special Session of the Parliament.

5. The Petitioner contends in the Petition that the disease mentioned in the fax message sent by the Respondent was not so serious as to “hamper him to attend the Special Session” and that the Respondent deliberately attempted to violate the whip and that he remained absent against the Party’s directions and whip, which has not been condoned by the Party.

6. Thus, the Petitioner contends that the act of the Respondent, Dr. P. P. Koya falls under paragraph 2 (1)(b) of the Tenth Schedule to the Constitution of India and as such he is disqualified from being and continuing as a Member of the present Lok Sabha.

7. By a letter dated 22 August, 2008 addressed to the Joint. Secretary, Lok Sabha Secretariat, the Respondent acknowledged the receipt of the Petition filed by the Petitioner and referred to his admission to the ENT Hospital at Vishakapatnam on 21 July, 2008 and about his operation on the next day and stated that he had not deliberately abstained from the Special Session of the Lok Sabha and his absence was because of his adverse health condition.

8. The Respondent filed a detailed reply on 22 September, 2008 in answer to the Petition filed by the Petitioner, in which he referred to a Function held at

Vishakapatnam on 20th July, 2008 and of his illness and of his treatment in the ENT Hospital and annexed several documents regarding his illness and treatment. According to the Respondent he was "supposed to fly to Delhi to attend Special Session of the Parliament" but due to his illness he could not and that was why he had sent a fax message on 22nd July, 2008 explaining his health condition and his inability to attend the Special Session to the Speaker, with a copy of the same to Shri Prabhunath Singh, Leader of the JD (U) Parliamentary Party and also to the Party Headquarters.

9. I gave a personal hearing to the parties on 12th September, 2008, at which both the Petitioner and the Respondent were present wherein the Petitioner contended that the Respondent had neither got prior permission nor his absence had been condoned by the Party and on the other hand the Party had taken the decision to expel him from the Primary Membership of the Party on 24th July, 2008. At the hearing, the Respondent admitted that the Whip was served on his son on 21st July, 2008 and he referred to his illness and hospitalization. The full record of the hearing will appear from the minutes of the proceedings of the said date.

10. At the said hearing, the Respondent asked for time to produce certain further documents and to enable him to do so, I adjourned the hearing of the matter till 24th September, 2008.

11. The next hearing was held on 26th September, 2008, at which the Petitioner and Shri Prabhunath Singh, the Leader of his Party, the Respondent and his learned lawyer were present and submissions were made by the Petitioner as well as the Learned Lawyer of the Respondent. The proceedings of said hearing will appear from the minutes of the said hearing, which are part of the record of these proceedings. At the hearing, the Learned Lawyer of the Respondent requested for some more time to prove the documents produced by his client. To enable the Respondent to produce such evidence, as he wanted to, the matter was adjourned and the next date of hearing was fixed on 22nd December, 2008.

12. After considering the issues involved and the contentions of the respective parties, I was satisfied that having regard to the nature and circumstances of the case, it was necessary and expedient to refer the Petition to the Committee of Privileges of Lok Sabha for holding a preliminary enquiry and to submit its Report to me, as provided by Rule 7(4) of the Members of Lok Sabha (Disqualification on Ground of Defection) Rules, 1985; and it was so referred to the Committee on 1st December, 2008.

13. On 15th December, 2008, the Committee of Privileges, Lok Sabha submitted its Report to me as the Speaker. The Committee gave opportunity to the Petitioner to attend the proceedings before it and in its Report, it has held that the Respondent failed to conclusively prove that he was so much incapacitated physically that he was unable to at-

tend the voting on the Motion of Confidence on 22nd July, 2008, that there was no material evidence to show that his illness was so serious as to prevent him from voting on the Motion of Confidence on 22nd July, 2008 and that there was nothing to show that he was medically advised not to travel to Delhi. The Report of the Committee as well as the Minutes of the meetings thereof, containing, inter alia, the evidence of the Respondent tendered before the Committee of Privilege will form part of the record of this proceeding.

14. After the submissions of the Report of the Committee of Privileges, a copy of which was received by the Respondent, I held, on 22nd December, 2008, a further personal hearing in the matter at which the Respondent was present. The Petitioner has in the meantime resigned from the membership of the Lok Sabha and as such was absent. At the said hearing, the Respondent made his submissions and also tendered evidence, stating, inter alia, that he was not only ill but also was not supposed to travel when he was admitted as an in-patient. The Respondent referred to the medical certificates and submitted, "these are my certificates. If those certificates are not enough, please help me to get some more, which I can. Can I get my doctor here? Can I get another certificate from the doctor?"

15. Thereafter, in consideration of the request made by the Respondent before me, a notice was sent to the concerned doctor, namely, Dr. A. Jammeswararao, Professor ENT, H & N Surgery, AMC, Vishakapatnam, Andhra Pradesh requesting him to appear before me and give evidence for which the date was fixed for 6th January, 2009, on which date a further personal hearing was granted by me, at which apart from the Respondent, the said doctor was also present. The full record of the evidence given by Dr. A. Jammeswararao will appear from the minutes of the personal hearing on 6th January, 2009, and forms part of the record of this proceeding.

16. During the evidence, Dr. A. Jammeswararao, stated, inter alia, that the Respondent, Dr. P. P. Koya could have travelled to Delhi on 20th or 21st July, 2008 and he had not advised him not to travel on the said dates and as the situation got worse on 22nd July, 2008 he got Dr. Koya admitted for hospitalization. From the evidence, therefore, it appears that the Respondent could have easily come to Delhi on 20th or 21st July, 2008 although later on in an answer to my specific question, the doctor said it was not advisable for him to travel, which was contrary to what he said earlier.

17. In course of his evidence given at the hearing on 22nd December, 2008, the Respondent had admitted that he had to attend a Function at Vishakapatnam on 20th July, 2008 but admitted that he had not made any arrangements to reach Delhi the next day, that is, on 21st July, 2008 on which date the debate on Confidence Motion was to begin. He admitted he had not booked any seat in any flight and that "generally agents do that". Then the following transpired at the hearing :

“Mr. Speaker : Can you prove that it was done in this case? For the voting on 22 July, did you book any seat?”

Respondent: No. My ticket was only for 26 July. I have not booked for that particular date.

Mr. Speaker : 20 July was the function; 21 and 22 was the Session dates. So, you must be wanting to come to Delhi after the Function was over, from Vishakapatnam to Delhi. Have you booked for that journey?

Respondent : It was done in good faith. By the time, I started thinking of coming to Delhi, I was not well.

Mr. Speaker : So, there was no question of booking ?”

18. Paragraph 2 (1) (b) of the Tenth Schedule to the Constitution provides that subject to the provisions of paragraphs 4 and 5, a Member of the House belonging to any political party shall be disqualified for being a Member of the House, if he votes or abstains from voting in such House contrary to any direction issued by the political party to which he belongs, without obtaining the prior permission of such political party or without obtaining the condonation of the political party for such voting or abstention within 15 days from the date of such voting or abstention. In the present case, the provisions of paragraphs 4 and 5 have no application.

19. In the decision of Dr. Mahachandra Prasad Singh *versus* Chairman, Bihar Legislative Council and Other (2004) 8 SCC 747, the Hon'ble Supreme Court has been pleased to observe that under the Tenth Schedule, “the final authority to take a decision on the question of disqualification of a Member of the House vests with the Chairman or the Speaker of the House. It is to be noted that the Tenth Schedule does not confer any discretion on the Chairman or Speaker of the House. Their role is only in the domain of ascertaining the relevant facts. Once the facts gathered or placed show that a Member of the House has done any such act which comes within the purview of sub-paragraphs (1), (2) or (3) of paragraph 2 of the Tenth Schedule, the disqualification will apply and the Chairman or the Speaker of the House will have to make a decision to that effect.”

20. As stated before, ample opportunity was given to the Respondent to present his case at the personal hearings given to him and he was assisted by his Learned Lawyer and at his request Lok Sabha Secretariat also arranged for the presence of the concerned doctor at Vishakapatnam, so that he could give his evidence at the personal hearing before me.

21. As it has been mentioned earlier, the Privileges Committee of Lok Sabha, after giving full opportunity to the Parties, particularly, the Respondent and after full deliberations, in its Report has held that the Respondent was not so ill to be precluded from attending the House on 21st and 22nd July, 2008. I have also referred to the nature of the evidence, which has been adduced before me and it is

clear that after attending the function at Vishakapatnam on 20th July, 2008, it was expected of the Respondent that he would forthwith come to Delhi for which at least bookings or reservations would have been made but on his own admission, he had not done so and on the other hand he said that his ticket to come to Delhi was only for 26th July, 2008 and when he was asked why he did not book for journey on 21st or 22nd July, 2008, he gave an evasive answer, which has been quoted above.

22. After giving my anxious consideration to all the materials and particularly, the evidence tendered before me and considering the fact that the Respondent admitted that he was served the Party Whip, it seems to me, that he abstained from voting during the Motion of Confidence as directed by his Party by remaining absent from the House and the evidence of “illness” that has been produced is not sufficient to conclude that he was so ill that he could not come to attend the proceedings of the House or to take part in the voting, which was held on 22nd July, 2008. In any event, he admitted that he had made no attempt to come to Delhi soon after the function at Vishakapatnam was over on 20th July, 2008 and that his ticket was booked for 26th July, 2008, shows that his abstention was not forced by any such circumstances, which precluded him physically from attending the Session. In this respect, I accept the findings of the Committee of Privileges. I regret that I am unable to accept the contention of the Respondent that he was not well enough to attend the proceedings of the House for the purpose of voting during the Motion of Confidence held on 22 July 2008.

23. As Speaker, my primary obligation is to ascertain the relevant facts as has been held by the Hon'ble Supreme Court. Having come to the conclusion that the Respondent abstained from voting contrary to the direction of his Party on 22 July 2008, the act of the Respondent comes within the purview of paragraph 2(1)(b) of Tenth Schedule to the Constitution and I decide accordingly.

24. Thus, I hold that the Respondent, Dr. P.P. Koya, an elected Member of the Lok Sabha from Lakshadweep Constituency, has incurred disqualification under paragraph 2(1)(b) of the Tenth Schedule to the Constitution of India, by his abstention from the House and by not casting his vote against the Confidence Motion moved by the Hon'ble Prime Minister of India at the voting held on 22nd July, 2008.

25. Thus, the Respondent stands disqualified for continuing as a Member of the Fourteenth Lok Sabha and it is declared that his seat has fallen vacant.

Sd/-

New Delhi

SOMNATH CHATTERJEE

Dated the 9th January, 2009

SPEAKER, LOK SABHA”

[No. 46/37/2008/T

P. D. T. ACHARY, Secy.-General